इकाई 32 देवनागरी लिपि का विकास

इकाई की रूपरेखा

32.1 उद्देश्य

इस इकाई में हम लिपि के गुणों की चर्चा करते हुए इस संदर्भ में विश्व की विभिन्न लिपियों विशेषकर हिंदी की वर्तमान लिपि देवनागरी का परिचय प्राप्त करेंगे। देवनागरी लिपि के संदर्भ में उसके उद्‌भव और विकास की चर्चा करते हुए वर्तमान युग में देवनागरी की चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- लिपि की प्रकृति और विशेषताओं की चर्चा कर सकेंगे;
- विश्व की प्रमुख लिपियों का परिचय दे सकेंगे;
- देवनागरी के उद्‌भव और विकास का वर्णन कर सकेंगे;
- देवनागरी लिपि के गुणों, स्थिति और समस्याओं का विवरण दे सकेंगे; और
- देवनागरी के मानकीकरण की आवश्यकता की चर्चा कर सकेंगे।

32.2 प्रस्तावना

भाषा मूलत: उच्चरित होती है। उच्चरित भाषा में शब्दों का निर्माण ध्वनियों याने वाक् ध्वनियों से होता है। हम उच्चरित भाषा को कानों से सुनते हैं और निहित अर्थ ग्रहण करते हैं। उच्चरित भाषा के शब्दों को रेखीय (graphic) पद्धति से पत्थर, कागज़ आदि माध्यमों में अंकित करने के लिए हम लिपि (script) का उपयोग करते हैं। भाषा के शब्दों के रेखीय अंकन की भी दो प्रमुख पद्धतियाँ हैं। चीनी जैसी भाषाओं में पूरे शब्द के उच्चारण को एक चित्र द्‌वारा दिखाया जाता है। अंग्रेजी हिंदी जैसी भाषाओं की लिपियों में भाषा की ध्वनियों के लिए अलग-अलग वर्णों को प्रतीक के रूप में निर्मित किया जाता है और उच्चारण क्रम से वर्णों को क्रम से लिखा जाता है।

यद्यपि उच्चारण ही भाषा का मूल स्वरूप है, लिपि से भाषा का महत्व बढ़ जाता है। लिपि भाषा को स्थायित्व प्रदान करती है, लिपि से भाषा की साहित्यिक - सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण होता है। इस तरह हम पाते हैं कि उन्नत संस्कृतियों ने लिपि का निर्माण किया; इसी तरह लिपि के निर्माण से संस्कृति उन्नत हुई।

प्राचीन युग में विश्व में तीन-चार ही लिपियाँ थी जिनमें चीनी लिपि आज तक चली आ रही है। मेसेपोटेमिया के कीलाक्षरों वाली लिपि (enneiform) का संशोधित रूप पुरानी मिस्र की लिपि में देख सकते हैं। वर्तमान रोमन (Roman) लिपि का उत्स मिस्र की ध्वनात्मक लिपि (hieroglyplnic) ही है। पुराने सिनाई के शिलालेखों में सामी परिवार की प्राचीन लिपि का परिचय मिलता है, जिससे अरबी भाषा की लिपि विकसित हुई है।

भारत में संभवत: सबसे पुरानी लिपि सिंधु घाटी की लिपि है। इसके नमूने सिंधु घाटी से प्राप्त मुहरों (clay seals) में मिलते हैं। अति सीमित नमूनों के कारण इस लिपि का आज तक अभिज्ञान नहीं हुआ है। प्राचीन भारत में दो और लिपियाँ थीं ब्राह्मी लिपि और खरोस्ती लिपि। खरोस्ती बाद में विलुप्त हो गई और ब्राह्मी ही संस्कृत के लेखन का माध्यम बनी।

ब्राह्मी कितनी पुरानी है, इसका उद्भव कहाँ हुआ, ये सब प्रश्न अभी विवाद के घेरे में है। परवर्ती इतिहास से यह तो स्पष्ट है कि ब्राह्मी लिपि से ही भारत तथा सिंहल की सारी लिपियाँ विकसित हुई। ब्राह्मी ने न केवल लिपि चिह्न नहीं दिये हैं उच्चारण का क्रम, वर्णमाला का क्रम आदि बातों में भी भारतीय भाषाओं में मूलभूत एकता है, जिसका स्रोत ब्राह्मी लिपि है।

ब्राह्मी लिपि का प्रभाव क्षेत्र बहुत विस्तृत है। रोमन ध्वन्यात्मक (phonetic) लिपि है, जिसमें हर जगह स्वरों और व्यंजनों को अलग-अलग चिह्नों से दिखाया जाता है। ब्राह्मी आक्षरिक (syllabic) लिपि है, जिसमें एक या अधिक व्यंजन तथा स्वर (मात्रा) मिलकर एक लिपि चिह्न का निर्माण करते हैं। ब्राह्मी के प्रभाव के कारण एशिया की सारी लिपियाँ आक्षरिक हैं और लिपि चिह्नों के निर्माण के लिए इन लिपियों ने ब्राह्मी से प्रभाव ग्रहण किया है।

हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो आज संस्कृत, मराठी, हिंदी तथा नेपाली भाषाओं के लेखन में काम आती है। अन्य भारतीय लिपियों की तरह देवनागरी भी ब्राहमी से निकली है। देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहा जाता है, क्योंकि इसमें उच्चारण और लेखन का तालमेल ज्यादा है।

सरलीकरण के उद्देश्य से और मशीनी उपयोग को ध्यान में रखते हुए आधुनिक युग में देवनागरी लिपि का मानकीकरण किया गया था। अब कंप्युटर में भाषा के प्रयोग की संभावनाओं को देखते हुए देवनागरी में पुन: मानकीकरण की आवश्यकता दिखाई पड़ती है।

32.3 लिपि क्या है?

हम यह चर्चा करना चाहेंगे कि लिपि क्या है और भाषा में लिपि का स्थान क्या है। आप तो जानते ही हैं कि मानव सभ्यता कुछ ही हजार साल पुरानी है और इसी दौरान भाषा का भी आविष्कार हुआ। भाषा प्रारंभ में मौखिक ही थी और लेखबद्ध रूप देने का प्रयत्न बाद में ही हुआ। चित्रांकन संभवत: लिपि के आविष्कार का बीज है। मानव ने वस्तुओं को प्रत्यक्षत: चित्रित किया होगा और चित्र को ही उस उच्चारित शब्द का लिखित रूप मान लिया होगा। हम आगे देखेंगे कि चित्र लिपि भी विश्व की लिपियों का एक प्रकार है। हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है जो चित्र लेखन से लेखन की व्यवस्था के विकास की दिशा बता सकें। पुराने मिस्र के कीलाक्षर (hierographic) लेखन में प्रयुक्त कई लिपि चिह्न वास्तव में चित्र हैं। उदाहरण के लिए राजहंस का चित्रात्मक अंकन ही लिखित शब्द है। चीनी भाषा में सूरज की तस्वीर ही सूरज शब्द का संकेत चिह्न है। बाद में आवश्यकतानुसार अन्य शब्दों की रचना के लिए यादृच्छिक चिह्न बनाए गए। ऐसी लेखन पद्धति को चित्रात्मक (logographic) लेखन की संज्ञा दी जाती है।

प्रसंग से यह भी उल्लेख करना चाहेंगे कि लेखन की पद्धति भाषा की रचना को प्रभावित कैसे करती है। चित्रलिपि में एक शब्द से निर्मित अन्य शब्दों की गुंजाइश नहीं होती जैसे हम संस्कृत में भाव, स्वभाव, स्वाभाविक, अस्वाभाविक आदि संबद्ध शब्दों का निर्माण करते हैं; चीनी भाषा के शब्द रूप बदलते नहीं हैं। इसी कारण चीनी को पूर्णत: अश्लिष्ट भाषा कहा जाता है।

भाषाओं में लेखन की पद्धति का विकास इस रूप में किया जाता है कि उच्चारित भाषा का लेखन प्रतिनिधित्व करे। इसके लिए भाषा के उच्चारण खंडों (ध्वनि) के लिए लेखन के चिह्नों (वर्ण) की व्यवस्था की जाती है। इन लिपि चिह्नों को लिपि संकेत या वर्ण (character) कहा जाता है। फलत: यह कह सकते हैं कि लेखन उच्चारित भाषा का स्थापन्न रूप है और परिणामत: लेखन में वह गुण होना

चाहिए कि वह उच्चारण का प्रतिनिधित्व करे। चित्र लिपि में उच्चारण और लेखन का प्रत्यक्ष संबंध न होने के कारण अध्येताओं और प्रयोक्ताओं को बहुत कठिनाई होती है।

जिस भाषा में उच्चारण और लेखन का सीधा, अपवाद रहित संबंध होगा, उसकी लिपि वैज्ञानिक कही जाएगी। इसी संदर्भ में हम देवनागरी को वैज्ञानिक लिपि कहते हैं। इसकी और चर्चा आगे करेंगे।

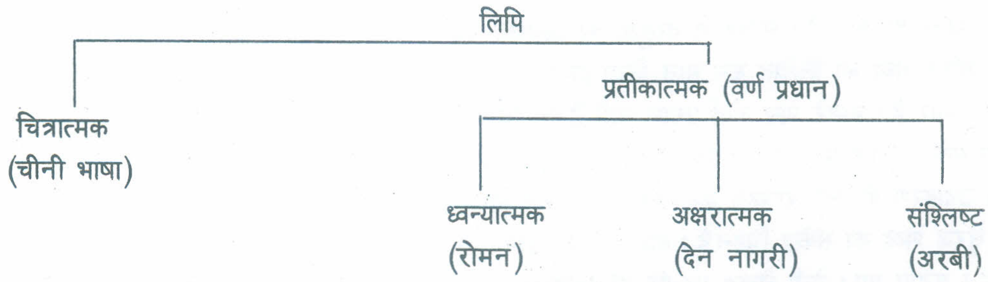
32.3.1 लिपि की आवश्यकता

लिपि क्यों आवश्यक है और युगीन परिस्थितियाँ लेखन को कैसे प्रभावित करती हैं, इसके बारे में विचार करेंगे। उच्चारित भाषा क्षणिक है, समय से बद्ध है। अगर हम महत्वपूर्ण विचारों को सुरक्षित रखना चाहें तो यह लेखन से ही संभव होगा। आदि युग में लेखन के साधन सीमित थे, अत: लोगों ने वाचिक परंपरा का निर्माण किया जिससे काव्य आदि पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सकें। इसलिए छन्दबद्धता, गेयता आदि काव्य के प्रमुख लक्षण बने। वेदों की सुरक्षा के लिए विस्मृति, विभ्रम या उच्चारण दोष के कारण वेद की संहिताओं में बिगाड़ न आए। इस तरह लेखन संस्कृति को सुरक्षित रखने तथा उसे परवर्ती पीढ़ियों तक संप्रेषित करने का सबसे कारगर माध्यम है। लेखन के माध्यम से साहित्य और संस्कृति के अन्य तत्व सुरक्षित रह जाते हैं। अगर हमारे पास पिछली पीढ़ियों की भाषा की सामग्री न हो, तो हम इस भाषा या साहित्य के इतिहास के अध्ययन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

उच्चारित भाषा स्थान की दृष्टि से भी सीमित है। अर्थात एक व्यक्ति अधिक से अधिक 50-100 लोगों को संबोधित कर सकता है। वैसे आधुनिक युग में संचार साधनों की उपलब्धता के कारण हम एक समय में करोड़ों लोगों को संबोधित कर सकते हैं, फिर भी स्थायित्व के कारण लेखन आवश्यक हो जाता है। लिपि विचार को स्थान की सीमा से मुक्त करती है। पुराने समय में लेखन के उन्नत साधनों के अभाव में लोग, छाल, चर्म, भोजपत्र आदि पर लेखन करते थे। लेकिन लेखन की कई प्रतियाँ बनाना कठिन था। इस कारण कम ही लोग लिखित साहित्य का अध्ययन कर पाते थे। कागज की ईजाद और मुद्रण काल के विकास के कारण आज लिखित सामग्री दूर दूर तक करोड़ों लोगों तक पहुँच सकती है। इस तरह लेखन, मुद्रण आदि तकनीकों के विकास के कारण भाषा, समय, स्थान और संख्या की सीमाओं से हो गई है। लिपि के कारण ही वर्तमान युग में भाषा और भाषा बोलने वाले समाज का पूर्ण विकास हो पाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि लेखन के अभाव में भाषा के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लग सकता है।

32.3.2 विश्व की प्रमुख लिपियाँ

विश्व में लगभग 20 ही लिपियाँ है और भाषाएँ एक ही लिपि में लिखी जाती हैं। ये प्रमुखत: दो प्रकार की हैं। चित्रात्मक लिपि तथा उच्चारण के लिए निर्मित ध्वनि चिह्न पर आधारित प्रतीकात्मक लिपि।



चीनी भाषा की लिपि चित्र लिपि है, जिसकी चर्चा हम कर चुके हैं। लिपि और उच्चारण में अलगाव के कारण उस लिपि को चीनी भाषा के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों में अलग ढंग से उच्चारित किया जाता है। यों कह सकते हैं कि भाषाई दृष्टि से चीन लिपि के कारण जुड़ा है उच्चारण से नहीं।

अन्य लिपियाँ उच्चारण पर आधारित हैं। इनके तीन प्रकारों की आगे चर्चा करेंगें।

1. ध्वन्यात्मक (phonetic) लिपि : अंग्रेजी की रोमन लिपि ध्वन्यात्मक कही जाती है क्योंकि इसमें हर स्वर या व्यंजन का अलग चिह्न होता है। रोमन लिपि का प्रयोग लैटिन से ही शुरू होता है। अंग्रेजी, फ्रैंच, स्पैनिश, इतालवी, रोमानी, चेक आदि भाषाएँ रोमन में ही लिखी जाती हैं। आज अफ्रीका के देश, मलेशिया, तुर्की आदि ने भी रोमन लिपि को अपना लिया है। रोमन का प्रयोग करने वाली भाषाओं में

लिपि और उच्चारण का सामंजस्य इतालवी, स्पेनिश आदि भाषाओं में सबसे अधिक है। अंग्रेजी में यह सामंजस्य कम है।

ग्रीक भाषा की ग्रीक लिपि तथा रूसी भाषा की सिरिलिक लिपि भी ध्वन्यात्मक हैं।

2. आक्षरिक (syllabic) लिपि : भारत तथा एशिया देशों की लिपियाँ आक्षरिक है, क्योंकि स्वर और व्यंजन के संयोजन में मात्रा युक्त अक्षर बनता है और कई जगह दो व्यंजन मिलकर नये अक्षर की सृष्टि करते हैं। भारत में लगभग वर्तमान 10 लिपियाँ है, जो ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हुई हैं। एशिया में ब्रह्मदेश, थाईलैंड, विएतनाम आदि भाषाओं की अपनी लिपि है। इन लिपियों के निर्माण में इन भाषाओं ने संस्कृत से प्रेरणा प्राप्त की है। जापानी ने संस्कृत से प्रेरणा लेकर अपनी लिपि पद्धति विकसित की और हजारों चीनी अक्षर भी ग्रहण कर लिए। जापानी में हिंदी की तरह मूल स्वर या व्यंजन नहीं हैं, हर स्वर व्यंजन संयोग का अलग चिह्न बन जाता है।

3. संश्लिष्ट लिपि : अरबी भाषा की लिपि में स्वर, व्यंजन के मूल वर्ण तो हैं, लेकिन शब्द में स्थान के आधार पर मूल स्वर या व्यंजन का अंश मात्र रह जाता है। जैसे ह (ح) के अलग जगह रूप होंगे - ﺢ, ﺣ या ﺤ अरबी भाषा के अलावा फारसी, उर्दू, सिंधी आदि भाषाएँ भी अरबी लिपि में लिखी जाती हैं।

32.4 प्राचीन भारत की लिपियाँ

प्राचीन भारत में भारत की व्यवहृत सिंधु घाटी की लिपि आज तक सारे संसार के लिए रहस्य बनी हुई है। इस लिपि के नमूने हमें मोहन-जो-दड़ो तथा हड़प्पा से प्राप्त सीलों से मिले हैं। चूँकि प्राप्त सामग्री अत्यंत सीमित हैं और संदर्भ स्पष्ट नहीं है, आज तक हम इन सीलों में उत्कीर्ण पाठ का पठन नहीं कर पाये हैं, यद्यपि पिछली सदी में संसार भर के अनेकों विद्वानों ने प्रयास कर लिया था। कई संस्थाएँ और विद्वान यह भी दावा करते हैं कि उन्होंने इस लिपि का ज्ञान अर्जित कर लिया है। कोई इसको द्रविड़ तथा स्थानीय उत्पत्ति मानते हैं; कोई कहता है कि यह सुमेरी लिपि से निकली है, कोई इसे ब्राह्मी का पूर्व रूप मानते हैं। सीलों से प्राप्त चिह्नों में कुछ चित्र लिपि के नमूने लगते हैं और कुछ ध्वनिसूचक लिपि चिह्न लगते हैं। कुछ विद्वान इसे चित्रलिपि और अक्षर लिपि का प्रारंभिक मिलाजुला रूप मानते हैं। अभी तक यह लिपि जिज्ञासा का विषय बनी हुई है।

प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में ब्राह्मी, खरोस्ठी, अंग, वंग, मगध, मांगल्य आदि कई लिपियों का उल्लेख मिलता है। इनमें ब्राह्मी और खरोस्ठी के अतिरिक्त किसी भी लिपि का प्रमाण नहीं मिलता। खरोस्ठी लिपि के प्राचीनतम नमूने हमें शिलालेखों में मिले हैं जिसका समय ई.पू. 5वीं सदी माना जाता है। अशोक के शिलालेखों के बाद से नियमित रूप से हमें ब्राह्मी में लिखे पाठ मिल रहे हैं।

32.5 ब्राह्मी लिपि और देवनागरी का विकास

ब्राह्मी शब्द की व्युत्पति कई प्रकार से दी जाती है। ब्राह्मी के अस्तित्व में आने तक या साथ-साथ विश्व में चार लिपि व्यवस्थाएँ प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। चीनी, असीरिया के कीलाक्षर (Cuneiform), यूनानी, और सामी (semitic) जिसमें अरबी की वर्ण व्यवस्था बनी। इन चारों की प्रकृति से ब्राह्मी इतनी भिन्न है कि प्रत्यक्ष स्रोत का अनुमान भी नहीं किया जा सकता। ब्राह्मी के भारतीय उत्पत्ति के संदर्भ में तीन संभावनाएँ बन सकती हैं। सिंधु घाटी की लिपि से ब्राह्मी के उद्भव की बात तभी सिद्ध हो सकती है जब सिंधु घाटी की लिपि पर से रहस्य का पर्दा उठ जाए। दूसरी संभावना है कि भारतीय मूल के किसी चित्रात्मक लिपि से इसका विकास। इसके लिए प्रमाणों का अभाव है। तीसरी संभावना है कि आर्यों ने अन्य लिपियों से प्रेरणा प्राप्त कर लिपि व्यवस्था का निर्माण किया हो। गौरीशंकर ओझा कहते हैं - "यह निश्चयपूर्वक कहा नहीं जा सकता कि ब्राह्मी लिपि का आविष्कार कैसे हुआ........इतना ही कहा जा सकता है कि ब्राह्मी अपनी प्रौढ़ अवस्था में और पूर्ण व्यवहार में आती हुई मिलती है और उसका किसी बाहरी स्रोत और प्रभाव से निकलना सिद्ध नहीं होता।"

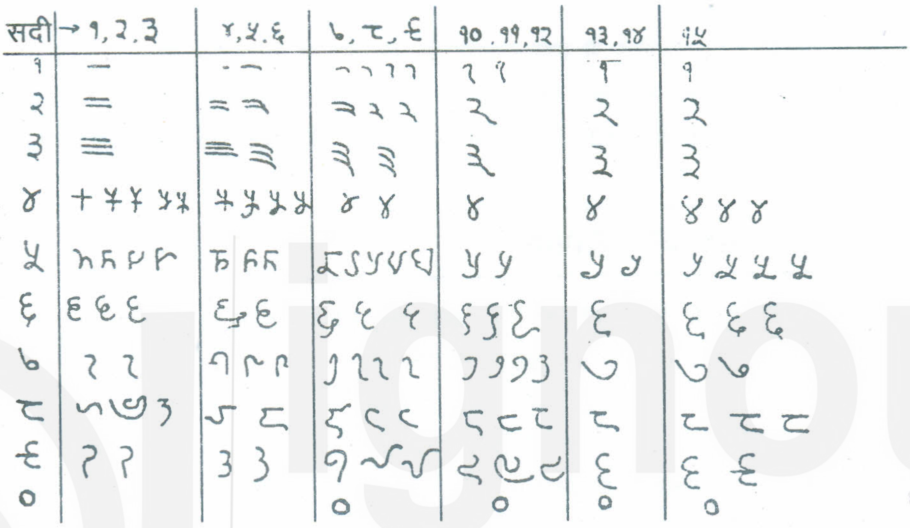
ब्राह्मी लिपि के नाम के संदर्भ में भी कई मत हैं। एक मत है कि ब्रह्मा इसकी सृष्टि के कर्ता हैं। राजबली पांडेय कहते हैं कि ब्रह्म ज्ञान के वेदों के लिए उपयोग में आने के कारण इसे ब्राह्मी कहा जाता

है लेकिन वेद हमारे सामने प्राचीन युग के लेखन में उपलब्ध नहीं होते। कुछ लोग यह मानते हैं कि ब्राह्मणों के द्वारा आविष्कार और प्रयोग के कारण यह ब्राह्मी कहलाई।

ब्राह्मी की कुछ विशेषताएँ हैं। इसमें संस्कृत की वर्णमाला के सभी वर्ण मिलते हैं। अत: यह स्पष्ट है कि संस्कृत भाषा के लेखन के लिए इसका प्रवर्तन किया गया, चाहे प्रेरणा स्रोत जो भी हो। यह बायें से दायें लिखी जाती है जबकि हीब्रू, सामी तथा अरबी लिपि दायें से बायें लिखी जाती हैं। इसमें स्वर, व्यंजन और मात्राएँ हैं जिससे यह भारत की अक्षरात्मक लिपियों का सूत्रधार बनी।

ब्राह्मी लिपि से देवनागरी के विकास क्रम को आप आगे देखेंगे।

ब्राह्मी लिपि में अंकों के लिए दशमलव पद्धति से अंक थे। उन अंकों से देवनागरी के अंकों के विकास को आप तालिका में देख सकते हैं।



यह उल्लेखनीय है कि ब्राह्मी के अंकों को अरब अपने साथ ले गये और यूरोपीय भाषाओं ने इन्हें अपनाया। यूरोप में प्रचलित रोमन अंक आदि का प्रयोग क्षेत्र सीमित हो गया। अरबी स्रोत से आने के कारण अंग्रेजों ने इन्हें अरबी अंक कहा।

ब्राह्मी से अन्य भारतीय लिपियों का विकास

विश्व की लिपियों की लगभग आधी लिपियाँ भारत में ही हैं। बंगला, गुजराती, गुरुमुखी, ओड़िया की लिपियाँ प्रत्यक्षत: ब्राह्मी के क्षेत्रीय रूपों से विकसित हुई। साथ ही गुप्त साम्राज्य समय की गुप्त लिपि, उससे निकली परवर्ती कुटिल लिपि, कश्मीर की शारदा लिपि, पूर्व की कैथी लिपि आदि भी ब्राह्मी से ही विकसित हुई।

दक्षिण की तमिल, तेलुगु, कन्नड और मलयालम की अपनी-अपनी लिपियाँ हैं। ये लिपियाँ भी ब्राह्मी की किसी दक्षिण शैली से ही विकसित हुई हैं। दक्षिण की भाषाओं में मूलत: महाप्राण ध्वनियों का और घोष ध्वनि (ग, द, ब, आदि) का अभाव था लेकिन संस्कृत भाषा के शब्दों और पाठों को लिखने की आवश्यकता के कारण तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ ने /क ख ग घ ङ। के समान चिह्नों और वर्णमाला के क्रम को अपना लिया। केवल तमिल भाषा में जैसे क, ङ; च, ञ; ट, ण; त, न; प, म दो-दो वर्ण ही हैं। फिर भी उल्लेखनीय है कि तमिल वर्णमाला में स्वरों और व्यंजनों का क्रम देवनागरी के ही अनुसार है। यह ब्राह्मी के प्रत्यक्ष प्रभाव के कारण ही है।

कुछ अन्य बोलियों की लिपियाँ या पुरानी लिपियाँ अधिक प्रचलित नहीं है। देश की अन्य कुछ भाषाएँ देवनागरी में या रोमन में या क्षेत्रीय लिपि में लिखी जाती हैं।

ये नौ लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से निकली हैं। इसलिए इन लिपियों में कई वर्ण समान हैं, लेखन की प्रवृत्ति एक जैसी है। विकास क्रम में इन लिपियों में अंतर आते गए, फिर भी साम्य को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आगे की तालिका में, इन लिपियों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं-

कई जगह वर्णों की आकृति भी समान है। उदाहरण के लिए आरेख में निम्नलिखित वर्ण देखिए -

ब्राह्मी	𑀅	𑀇	𑀏		𑀓	𑀝	𑀦	𑀧	𑀭	𑀮
हिंदी/मराठी	अ	इ	ए	ओ	क	ट	न	प	र	ल
गुजराती	અ	ઇ	એ	ઓ	ક	ટ	ન	પ	ર	લ
पंजाबी	ਅ	ਇ	ਏ	ਓ	ਕ	ਟ	ਨ	ਪ	ਰ	ਲ
बांगला/असमिया	অ	ই	এ	ও	ক	ট	ন	প	র	ল
ओड़िया	ଅ	ଇ	ଏ	ଓ	କ	ଟ	ନ	ପ	ର	ଲ
तमिल	அ	இ	எ	ஓ	க	ட	ன	ப	ர	ல
मलयालम	അ	ഇ	എ	ഓ	ക	ട	ന	പ	ര	ല
कन्नड़	ಅ	ಇ	ಎ	ಓ	ಕ	ಟ	ನ	ಪ	ರ	ಲ
तेलुगु	అ	ఇ	ఎ	ఓ	క	ట	న	ప	ర	ల

कुल मिलाकर कह सकते हैं कि भारत की आर्य और द्रविड़ भाषाओं में वर्ण, वर्णमाला, उच्चारण, शब्द संरचना आदि की दृष्टि से मूलभूत एकता है जो परस्पर आदान-प्रदान द्वारा स्थापित हुई है। इसी कारण एमनो नामक प्रसिद्ध भाषाविज्ञान भारत को एक समन्वित भाषा क्षेत्र कहते हैं।

भाषाओं में भी वर्ण साम्य सिर्फ़ स्वर व्यंजनों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि मात्राओं के लेखन में भी समानता देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए

हिंदी	का	की	कू	के	को
गुजराती	કા	કી	કૂ	કે	કો
पंजाबी	ਕਾ	ਕੀ	ਕੂ	ਕੇ	ਕੋ
बांगला/असमिया	কা	কী	কূ	কে	কো
ओड़िया	କା	କୀ	କୂ	କେ	କୋ
तमिल	கா	கீ	கூ	கே	கோ
मलयालम	കാ	കീ	കൂ	കേ	കോ
कन्नड़	ಕಾ	ಕೀ	ಕೂ	ಕೇ	ಕೋ
तेलुगु	కా	కీ	కూ	కే	కో

भारत में उर्दू को छोड़कर कुल नौ प्रमुख लिपियाँ हैं। देवनागरी का उपयोग संस्कृत के अतिरिक्त हिंदी, मराठी और नेपाली भाषाओं के लिए होता है। बांगला लिपि का उपयोग कुछ परिवर्तनों के साथ असमिया और मणिपुरी के लिए होता है। वैसे आजकल मणिपुरी भाषा में अपनी पुरानी लिपि मेईथेई को पुनरुज्जीवित करने के प्रयास हो रहे हैं।

32.6 देवनागरी लिपि

ब्राह्मी लिपि से, जो संस्कृत भाषा के लेखन के लिए सदियों तक व्यवहार में आती रही, बाद में देवनागरी लिपि का विकास हुआ। देवनागरी संस्कृत भाषा की प्रमुख लिपि बनी, भले अन्य लिपियों में भी संस्कृत का लेखन होता रहा।

तमिलनाडु में संस्कृत के लेखन के लिए तमिल और मलयालम के वर्णों के योग से 'ग्रंथ' लिपि का प्रचलन हुआ।

देवनागरी नामकरण संबंधी प्रमुख मत निम्नलिखित हैं:-

1. बौद्ध ग्रंथ ललित विस्तार में उल्लेखित 64 लिपियों में से नागलिपि के आधार पर इसका नाम पड़ा।
2. गुजरात के नागर ब्राह्मणों ने सर्वप्रथम इसका उपयोग किया।

3. नगरों में विकास होने के कारण यह देवनागरी है।

4. देवनागरी काशी में प्रचार प्रसार होने के बाद यह नाम पड़ा।

5. दक्षिण के विजयनगर राजाओं के दानपत्रों में इसे नंदि नागरी का नाम दिया गया है। इसी से देवनागरी नाम का विकास हुआ।

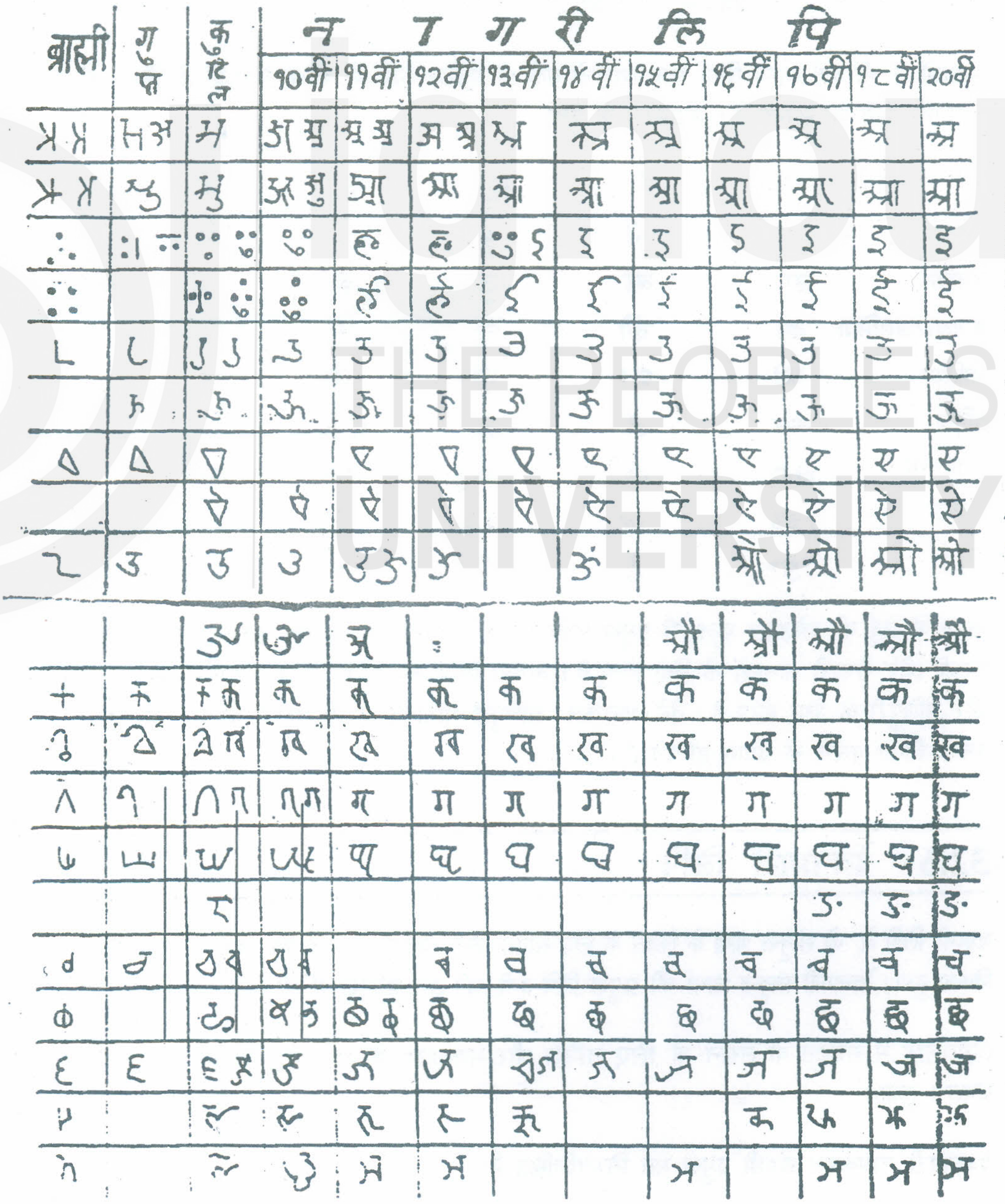
6. तांत्रिक उपासना पद्धति में देवनगरम नामक यंत्रों के बीच अंकित सांकेतिक चिन्हों से देवनागरी लिपि का विकास होने के कारण उसका नाम देवनागरी हुआ।

7. प्राचीन काल में देव रूप में सम्मानित राजाओं द्वारा प्रयोग किए जाने के कारण देवनागरी नाम पड़ा।

8. मध्ययुग की नागर स्थापत्य शैली से समानता के कारण यह नाम पड़ा।

9. इसमें देववाणी संस्कृत का लेखन होने के कारण देवनागरी नाम पड़ा।

आगे की तालिका में हम देवनागरी के विकास क्रम को देख सकते हैं-





तालिका से यह स्पष्ट होता है कि दसवीं शताब्दी से ही हमें देवनागरी में लेखन के नमूने प्राप्त हो जाते हैं। 18वीं शताब्दी के मध्य तक हिंदी में मुद्रण के विकास के साथ यह परिपक्वता में पहुँची। आज देवनागरी का उपयोग संस्कृत और हिंदी के अतिरिक्त मराठी और नेपाली में भी होता है। हिंदी की समस्त बोलियाँ देवनागरी में ही लिखी जाती हैं। और बोलियों की लिपियाँ समाप्त हो चुकी हैं। कश्मीरी और सिंधी भाषाएँ अरबी-फारसी लिपि में लिखी जाती हैं। आजकल उन दोनों भाषाओं के लिए भी देवनागरी के उपयोग करने की अपील की जा रही है। भारत के सुदूर पूर्व में तथा महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार आदि के इलाके में बोली जाने वाली जन जातियों की भाषाओं के लिए भी देवनागरी के उपयोग करने का प्रयास किया जा रहा है।

पूरे भारत की भाषाओं के लिए देवनागरी को सामान्य लिपि यानी अखिल भारतीय लिपि बनाने के पक्ष में कुछ विद्वान राय देते हैं लेकिन बंगला, तमिल, आदि समुन्नत भाषाओं की अपनी लिपि होने के कारण यह विचार कार्य रूप में परिणत नहीं हो सकेगा। हाँ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने यह अनुभव किया है कि देवनागरी लिपि में अन्य भाषाओं के लिए व्यवस्था की जानी चाहिए। निदेशालय ने परिवर्धित देवनागरी में अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों के किए चिह्न प्रस्तावित किए हैं।

32.7 मानक देवनागरी : स्थिति और समस्याएँ

भारत के संविधान में घोषणा की गई कि देवनागरी में लिखी हिंदी भाषा संघ की राजभाषा होगी। इसके साथ हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ा। टंकण, मुद्रण, कंप्यूटर में प्रयोग आदि विविध नये क्षेत्रों में इस भाषा के प्रयोग का विस्तार हुआ। यह अनुभव किया गया कि सहज रूप में काम करने के लिए इसमें आवश्यक संशोधन और परिवर्तन करने की आवश्यकता अनुभव की गई। इस प्रक्रिया को हम लिपि का मानकीकरण कहते हैं।

32.7.1 लिपि सुधार आंदोलन

हिंदी भाषा की **लिपि** देवनागरी को हिंदी के संदर्भ में वैज्ञानिक **लिपि** कहा जाता है, क्योंकि लेखन और उच्चारण में बहुत तालमेल हो इस वैज्ञानिकता के बावजूद वर्णाकृति, वर्ण क्रम आदि समस्याएँ सामने आती हैं, तो इनके निवारण के लिए प्रयास किये जाते हैं। 1950 में राजभाषा घोषित किये जाने से पहले कई विद्वानों ने ऐसी समस्याओं के संदर्भ में देवनागरी में सुधार के प्रयास शुरू किये थे। हम यहाँ कुछ प्रमुख सुधार के प्रयत्नों की चर्चा करेंगे।

काका कालेलकर समिति ने दो महत्वपूर्ण सुझाव दिये जिसे महात्मा गांधी और विनोबा भावे का भी समर्थन प्राप्त है। एक, स्वरों में अ, आ अि, अी, अु जैसे अ की बारह खड़ी का उपयोग किया जाए। दो, गुजराती की तरह देवनागरी को भी बिना शिरा रेखा के लिखा जाए, जैसे भारत।

हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने 1941 में **लिपि** सुधार समिति बनाई थी, जिसमें निम्नलिखित सुझाव थे। 1) मात्राओं रेफ और अनुस्वार को **ऊपर न लिखकर अथवा लिखा जाए** जिससे उनका वर्ण क्रम स्पष्ट हो- जैसे क ल, क स, ध ॅ म। 2) इ की मात्रा को बाद में किया जाए, जैसे कीया (किया) और शील (शील) 3) ऊ की बारह खड़ी अपनायी जाए, 4) संयुक्त व्यंजनों में र को पूरा लिखा जाए, जैसे प्रेम, करम आदि 5) शिरारेखा का लेखन वैकल्पिक हो। 6) ध और भ भ्रम पैदा करते हैं। अत: इन्हें ऊपर से शुरू किया जाए जैसे **ध, भ**।

आचार्य नरेंद्र देव समिति उत्तर प्रदेश सरकार के प्रयत्न से 1947 में बनी थी जिसमें धीरेंद्र वर्मा, मंगलदेव शास्त्री आदि सदस्य थे। उनकी सिफ़ारिशें थी- 1) क्ष, त्र, श्र, द्य आदि संयुक्त वर्णों को निकाल देना 2) इ के लिए पश्चगामी, भिन्न मात्रा जैसे **की**, **की** 3) ध और भ का रूप।

नागरी प्रचारिणी- सभा के अनुरोध पर उत्तर प्रदेश सरकार ने 1953 में लिपि के सुधार के सुझाव दिये थे। ये हैं- 1) इ की मात्रा (क, की आदि) 2) क्ष, त्र, श्र जैसे सब संयुक्ताक्षरों को अलग लिखा जाए, जैसे क्ष, तर, शू आदि। 3) मानक वर्णों की सिफ़ारिश - ख, ध, भ, छ।

32.7.2 मानक हिंदी वर्णमाला

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** ने 1967 में परिवर्धित देवनागरी नामक प्रकाशन में मानक हिंदी वर्णमाला और वर्तनी को अंतिम रूप दिया। निदेशालय ने साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं के हिंदी में लेखन के लिए नये चिह्न भी सुझाये हैं। निदेशालय के इस प्रकाशन को हमने इस पाठ्यक्रम के आलेख संग्रह **विवेचना** में सम्मिलित किया है। आप उसे अवश्य पढ़ें और यथासंभव मानक लिपि और वर्तनी का अनुपालन करें।

निदेशालय ने पंचमाक्षर की जगह अनुस्वार के प्रयोग तथा त्त, **ड्ड** जैसे पुराने जुड़े हुए अक्षरों की जगह हलंत आदि से क्त, ड्ड जैसे अलग-अलग अक्षर लिखने की सिफ़ारिश की जिससे टंकण - मुद्रण तो सरल हुआ ही, भाषा अर्जन में भी सहजता आ गयी। वर्णों के संदर्भ में निदेशालय ने 1953 की सुधार समिति की सिफ़ारिश मानकर ख, ध, भ, छ को मानक घोषित किया, लेकिन सुधार आंदोलन समितियों की अन्य कोई भी सिफ़ारिश नहीं मानी गयी।

आधुनिक युग की भाषा की लिपि में युग की परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार मानकीकरण के उपाय करने होते हैं। यहाँ हम अच्छी लिपि के गुणों के संदर्भ में मानकीकरण के निम्नलिखित पक्षों की चर्चा करते हैं-

i) **एकरूपता :** एक ही वर्ण को कई ढंग से लिखा जाए, तो पाठकों, मुद्रकों और अध्येताओं को कठिनाई हो सकती है। निदेशालय ने परिवर्धित देवनागरी में अ, क्ष, ण आदि को मानक घोषित किया है और आदि वर्णों के लेखन को नकारा है।

ii) **सरलीकरण :** निदेशालय ने ळ के स्थान ल की सिफ़ारिश की है, क्योंकि इससे ल्ल, ल्य आदि संयुक्त अक्षरों का निर्माण सरलता से हो सकता है। इसी तरह **ड्ड** , **ह्य, ह्म, द्य** आदि के स्थान पर हलंत से ड्ड, ह्‌य, ह्‌म, द्‌य आदि गुच्छ बनाने की सिफ़ारिश की है। साथ ही **अन्त, पन्थ, बन्द, अन्य** के स्थान पर अनुस्वार से *अंत, पंथ, बंद, अंध* आदि शब्द लिखने की सिफ़ारिश की गई है, जिससे अध्येता आसानी से लिख-पढ़ सके।

उल्लेखनीय है कि यांत्रिक साधनों की सीमा को ध्यान में रखते हुए सरलीकरण करना अनिवार्य हो जाता है। टंकण यंत्र में कुंजियों की सीमित संख्या के कारण ङ्‌ क्त आदि अक्षर टंकित कर पाना असंभव-सा है।

iii) **वैज्ञानिकता** : अवैज्ञानिक लिपि से भ्रम पैदा होता है और इससे भाषा का उपयोग बाधित होता है। निदेशालय ने पूर्व रूप / ख / के स्थान पर / ख / के लेखन की सिफ़ारिश की है, क्योंकि इसे पाठक कई जगह र + व समझ जाता था और 'खाना' और 'रवाना' में अंतर नहीं कर पाता था। /भ/ के स्थान पर /भ/ की सिफारिश का भी यही आधार है, क्योंकि त्वरित लेखन में इससे /म/ का भ्रम हो जाता था।

iv) **सार्वभौमता** : हिंदी में अभी इस गुण का अभाव है। रोमन लिपि में कंप्यूटर से लिखी गई सामग्री को आप अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कहीं भी पढ़ सकते हैं क्योंकि इसके html नामक सामान्य मानक का विकास किया गया है। हिंदी में इस मानक के अभाव के कारण प्रोग्रामों, कंप्यूटरों के बीच सामग्री का आदान-प्रदान असंभव-सा है।

हिंदी में वर्णाकृति के मानकीकरण की भी आवश्यकता है, जिससे कंप्यूटर मुद्रित सामग्री को पढ़ सके। अंग्रेजी में Optical Character Reader (OCR) नामक कार्यक्रम विकसित हुआ है, जो छपी सामग्री को निवेश (input) के रूप में ले लेता है। हिंदी में अभी OCR कार्यक्रम नहीं बना है।

लिपि और उच्चारण के सामंजस्य के मानकीकरण की भी आवश्यकता है, जिससे वक्तव्य सुनकर कंप्यूटर उसे पाठ के रूप में बदल ले। इस संदर्भ में आगे की दिशाओं और संभावनाओं के बारे में आप अगले प्रकरण में पढ़ेंगे।

32.7.3 मानकीकरण की प्रक्रिया

मानकीकरण लंबी प्रक्रिया है और बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार नये सिरे से मानकीकरण करने की आवश्यकता होती है। मुद्रण और टंकण तक वर्णाकृति (वर्ण का अनुपात, आकार आदि) के मानकीकरण की बात सोची ही नहीं गई थी। उस समय सुघड़ता, सुंदरता और सुबोधता मात्र अच्छे वर्णों के लक्षण माने जाते थे। लेकिन आज हमें वर्णाकृति को भी मानकीकृत करने की आवश्यकता है, अन्यथा कंप्यूटर द्वारा मुद्रित पाठ का पठन और निवेश संभव नहीं हो पाएगा। तभी हम हिंदी के लिए आदान-प्रदान के लिए html, फान्ट का उपयोग कर पाएँगे।

चिंता की बात है कि हिंदी की वर्णमाला का भी मानकीकरण नहीं हुआ है। इसका कारण यह है कि हम विरासत में प्राप्त संस्कृत वर्णमाला में कोई छेड़छाड़ करने को मानसिक रूप से तैयार नहीं हैं। लेकिन हिंदी में निम्नलिखित वर्ण और चिह्न लेखन में प्रयुक्त होते हैं, जिनका वर्णमाला में स्थान निश्चित नहीं है-

हिंदी के आंतरिक विकास से प्राप्त	ड़ (जोड़) ढ़, (पढ़) ँ (साँस)
उर्दू-अंग्रेज़ी शब्दों के लिए गृहीत	ज़ फ़
उर्दू के शब्दों के लिए गृहीत	ख़ (बुख़ार) - सीमित
	क़ (क़दर) ग़ (दिमाग़) - नगण्य
अंग्रेजी के स्वर के लिए निमित	(कॉलेज)
संस्कृत से प्राप्त	(हलंत) बुद्ध, महान्

हमें निर्णय करना होगा कि इनमें से किन चिह्नों को अपनाएँ और उन्हें वर्णमाला में कहाँ और कैसे दिखाएँ। तभी हम कंप्यूटर के लिए मानक कुंजीपटल तैयार कर पाएँगे।

लिपि के मानकीकरण के संदर्भ में अहम मुद्दा है सही अकारादि क्रम का। आज शब्दकोशों में ज़ और ज में क्रम की दृष्टि से कोई अंतर नहीं किया जाता। लेकिन इन्हें हिंदी के दो अलग वर्ण मानें, तो इनका स्थान अलग होगा और शब्दकोश में भी इनकी प्रविष्टियाँ अलग जगह होंगी। यही बात ऊपर के इन सभी वर्ण चिह्नों पर लागू होती है।

पूर्वकृत मानकीकरण के प्रयत्नों के संदर्भ में हमारे सामने पंचमाक्षर वाले शब्दों के दो विकल्प हैं -

अंदर/अन्दर, पंडित/पण्डित। कंप्यूटर इन्हें दो अलग शब्दों के रूप में पहचानेगा और दो अलग जगहों में रखेगा। यह कठिनाई लंबी नाम सूचियों को या किसी पुस्तक में आए शब्दों को कंप्यूटर द्वारा अकारादि क्रम में व्यवस्थित करने के कार्यक्रम में बाधा पहुँचाएगी। इन व्यावहारिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हिंदी वर्णों और वर्तनी रूपों के अकारादि क्रम को मानकीकृत करने की आवश्यकता है। अन्यथा शब्दकोश बनाना कठिन होगा। सूचना के अभाव में कार्यालय की गतिविधियाँ प्रभावित होंगी और कंपनियों को घाटा उठाना पड़ सकता है।

लिपि की वैज्ञानिकता का प्रश्न

प्राय: कहा जाता है कि देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है और इसमें उच्चारण और लेखन का तालमेल है। यह बात स्पष्ट करना चाहेंगे कि 'देवनागरी लिपि' के वैज्ञानिक होने की बात अपने में सार्थक नहीं है, जब तक हिंदी की लिपि या संस्कृत की लिपि आदि की बात न की जाए। इस बात को स्पष्ट करने के लिए हम संस्कृत और हिंदी भाषा में लेखन और उच्चारण की तुलना करना चाहेंगे। निम्नलिखित स्थिति में जहाँ लेखन और उच्चारण का तालमेल टूटता है, उसे रेखांकित किया गया है -

संस्कृत

तेषां teṣām   सतत satata   य: yaḥ   संशय: saṃʃayaḥ   सदैव sadaiva   चिह्न čihna

हिंदी

आशा āṣā   भाषा bhāṣā   सतत satat   संस्कार sanskār   चिह्न cinnh
सदैव sad [illegible] v   भैया bhaiya   एवं evam   तुम tum   मैं mɛ̃

इस चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी भाषा की विधि की वैज्ञानिकता को उस भाषा के संदर्भ में ही आँका जा सकता है; भाषा निरपेक्ष रूप में नहीं। सार रूप में कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा की लिपि में हिंदी की अपेक्षा वर्ण-ध्वनि का सामंजस्य ज़्यादा दिखाई देता है। हिंदी या मराठी भाषाओं की लिपि की वैज्ञानिकता को उन भाषाओं के संदर्भ में ही देखा जा सकता है।

32.8 सारांश

लिपियाँ भाषाओं को स्थिरता देने और संस्कृति को आगे बढ़ाने का साधन हैं। लिपि के कारण ही शिक्षा, विज्ञान आदि का विकास संभव हो पाता है।

लिपि भाषा के उच्चरित रूप का प्रतीक है। हम मौखिक भाषा को ही लिखित रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस तरह लिपि भाषा की प्रतिनिधि है।

विश्व में लगभग 20 लिपियाँ हैं, जिनमें दस भारत में ही हैं। रोमन लिपि में अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं, अरबी लिपि में अरबी, फ़ारसी, उर्दू आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं, देवनागरी में संस्कृत, हिंदी, मराठी, नेपाली आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

भारत में तमिल, तेलुगु, गुजराती, पंजाबी, ओड़िया, बांगला आदि भाषाओं की अपनी-अपनी लिपियाँ हैं। ये सारी लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं, जिसमें प्रारंभ में संस्कृत भाषा लिखी जाती थी। सामान्य स्रोत से उत्पन्न इन लिपियों के कारण इन भाषाओं में वर्ण के आकार, वर्णमाला क्रम, उच्चारण आदि बातों में गहरा साम्य मिलता है।

लिपि का भाषा से अप्रत्यक्ष संबंध ही है, क्योंकि हम उच्चारण की हर विशेषता को लिपि में नहीं दिखा सकते। कुछ भाषाओं में (जैसे अंग्रेज़ी) वर्ण-उच्चारण सामंजस्य कम होता है, कुछ भाषाओं में (जैसे संस्कृत) यह सामंजस्य अधिक है। हिंदी भाषा में संस्कृत की परंपरा के कारण वर्ण-उच्चारण सामंजस्य काफ़ी है। इसलिए देवनागरी को वैज्ञानिक लिपि कहा जाता है।

लिपि में युग के अनुसार परिवर्तन-संशोधन करने की आवश्यकता पड़ जाती है, जिसे मानकीकरण कहते हैं। आधुनिक युग में कम्पयूटर के प्रयोग की स्थिति में मानक लिपि की आवश्यकता है जिससे प्रकाशन, शब्दकोश निर्माण, कंम्प्यूटर द्वारा वाचन आदि कार्यक्रम बन सकें।

32.9 अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भारतीय भाषाओं की लिपियों की मूलभूत एकता स्पष्ट कीजिए। (500 अक्षरों में)
2. देवनागरी के विकास क्रम का वर्णन कीजिए। (250 अक्षरों में)
3. लिपि की वैज्ञानिकता से क्या तात्पर्य है? (100 अक्षरों में)
4. हिंदी में मानकीकरण की आवश्यकता। (100 अक्षरों में)

संदर्भ ग्रंथ

धीरेंद्र वर्मा : ग्रामीण हिंदी

अंबा प्रसाद सुमन : हिंदी और उसकी उपभाषाएँ

भोलानाथ तिवारी : हिंदी भाषा

चंद्रधर शर्मा गुलेरी : पुरानी हिंदी

कैलाश चंद्र भाटिया : हिंदी भाषा : विकास और स्वरूप

हरदेव बाहरी : हिंदी भाषा

बाबूराम सक्सेना : दक्खिनी हिंदी

नगेंद्र (सं.) : हिंदी साहित्य का इतिहास

गौरी शंकर हीराचंद ओझा : भारतीय प्राचीन लिपिमाला

गुणाकर मुले : अक्षर कथा

देवीशंकर द्विवेदी : देवनागरी

उदय नारायण तिवारी : हिंदी भाषा का उद्गम और विकास

गोपाल राय : हिंदी भाषा का विकास